B.A I (Hon) Philosophy

February "न्याय दर्शन में ईश्वर अस्तित्व के प्रमाण" 2007

Dr. अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

9 Fri

Ans:→ कार्यायोजनधृत्यादेः पदात् प्रत्ययतः श्रुतेः वाक्यात् संख्याविशेषाच्च, साध्यो विश्वविदव्ययः।

(1) कार्यात् - संसार कार्य है, इसलिए इसका कारण होना आवश्यक है। जगत में जो सुव्यवस्था और व्यवस्था देखने में आती है उससे कर्त्ता की असीम बुद्धि का परिचय मिलता है।

(2) आयोजनात् - अणुओं के संयोग से जो भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुओं की रचना हुई है। वह अत्यन्त आश्चर्यजनक तथा उस संयोजक की बुद्धिमत्ता का प्रमाण है।

10 Sat

(3) धृत्यादेः - यह विश्व जिन अखण्डनीय तथा अनुल्लंघनीय नियमों के बल पर स्थिर है उन्हें देखकर विश्वनियन्ता की योग्यता पर चकित रह जाना पड़ता है।

(4) पदात् - संसार में अनन्त कला-कौशल पाये जाते हैं जो परम्परागत रूप में अज्ञात काल से चले आते हैं। इन सबों का एक स्रोत, उद्गमस्थान - ईश्वरीय बुद्धि के सिवा और क्या हो सकता है?

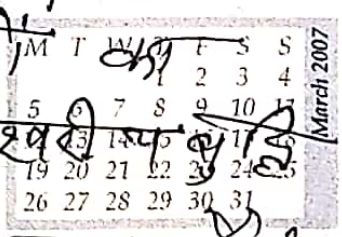

Scanned by CamScanner

11 Sun ④ प्रत्यक्षतः – विज्ञान की अभ्रान्तता देखकर पता चलता है कि उसका स्रष्टा (ईश्वर) असीम ज्ञान का भंडार है।

⑤ श्रुतेः – श्रुतिग्रन्थ स्पष्ट रूप से कहते हैं कि ईश्वर सर्वज्ञ और सृष्टिकर्ता है।

⑥ वाक्यात् – भाषा की उत्पत्ति पर विचार करने से ज्ञात होता है कि आदिम भाषा की सृष्टि न तो व्यक्ति विशेष द्वारा संभव है, न समुदाय विशेष द्वारा। भाषा ईश्वर की देन है और ईश्वरीय चमत्कार का द्योतक है।

12 Mon ⑦ संख्या-विशेषात् – संख्या का ज्ञान सर्वप्रथम कैसे हुआ? द्व्यणुक – त्र्यणुक आदि समुदायों की सृष्टि संख्याज्ञान के बिना नहीं हो सकती थी।

इससे सिद्ध होता है कि संख्याज्ञान का भी मूल आधार ईश्वर ही है। जिस ज्ञान का थोड़ा सा अंश पाकर मनुष्य गणितादि शास्त्रों का आविष्कार करता है, वह ज्ञान पूर्ण रूप से ईश्वर में वर्तमान है।

इन सब बातों से पता चलता है कि ईश्वर सर्ववित् और सर्वकर्ता है।

January 2007

M	T	W	T	F	S	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

13 Tue ईश्वर का स्वरूप

न्याय मतानुसार ईश्वर के लक्षण ये हैं:

① ईश्वर शरीररहित होते हुए भी इच्छा, ज्ञान और प्रयत्न इन गुणों से युक्त है।

② ईश्वर अनन्त ज्ञान का भंडार है। उसकी शक्ति का पारावार नहीं है। वह सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है।

③ ईश्वर जगत् का रचयिता है। वह परमाणुओं की सहायता से सृष्टि की रचना करता है। परमाणु (आकाश की तरह) नित्य हैं। वे ईश्वर के बनाये हुए नहीं हैं। पर उन्हीं के सहारे ईश्वर निखिल

14 Wed विश्व का निर्माण करता है। अतएव ईश्वर उत्पादक कर्ता नहीं है। अर्थात् वह मकड़े की तरह अपने भीतर से सृष्टि उत्पन्न नहीं करता। वह कुम्भकार की तरह प्रयोजक कर्ता है जो उपादानों को लेकर रचना करता है। अतएव नैयायिकगण ईश्वर को 'ब्रह्माण्ड कुलाल' कहते हैं। ईश्वर जगत् का उपादान कारण (Material cause) नहीं किन्तु निमित्त कारण (Efficient cause) है।

March 2007

M	T	W	T	F	S	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

15 Thu ⑧ ईश्वर सकल विश्व का संस्थापक और नियामक है उसके बनाये हुए नियमों के अनुसार संसार-चक्र चलता है। ईश्वर ही सम्पूर्ण सृष्टि का कर्त्ता धर्त्ता और संहर्त्ता है।

⑨ ईश्वर सब जीवों का कर्मफलदाता है। वह अन्तर्यामी और सर्वज्ञ होने के कारण सभी के पाप-पुण्य जानता है और उनके अनुसार ही प्राणियों को दुःख-सुख का भोग कराता है। प्रकृति जड़ होती है जीव अल्पज्ञ होते हैं। अतः भव-चक्र चलाने वाला सर्वज्ञ ईश्वर के

16 Fri सिवा और कोई नहीं हो सकता

कालकर्म प्रधानादेः चेतन याच्छिवोऽपरः।
अल्पज्ञत्वात्तु जीवानां ज्ञाता सर्वज्ञ एव सः॥

Scanned by CamScanner